किसान धरती की असली संतान हैं

किसान धरती की असली संतान है

इसलिए तो- धरती को जन्मदाता मानकर

तरह-तरह के हरियाली पट पहनाकर

धरती के दामन को बचाते हैं।

संतान है

इसलिए तो-

किसान अपना कर्म को फर्ज मानकर

जगह-जगह धरती पर पंक्तिबद्ध कोटी-कोटी वृक्ष लगाकर सजाते हैं।

संतान है

इसलिए तो-

दुनिया का कोई भी इंसान इनसे मिले वगैर

एक कदम आगे नहीं बढ़ाते हैं।

संतान है

इसलिए तो-

आंधी – तूफान खुद बारिश से

बचने के बजाय अपने शरीर को

भींगा-भींगा कर अपनी फसलों को बचाते हैं।

धरती की हरियाली बची रहे

इसलिए अपने तन को सुखाते हैं

संतान है

इसलिए तो

मिट्टी को पूजते हैं।

तेज नारायण राय

मेरा गांव मेरा देश

तेज नारायण राय

प्रकृति की गोद में बसा मेरा गांव।

जहां खडे हैं पीपल बरगद,

नीम पेड़ दे रहा झूम- झूमकर

शीतल छांव।

जहां के सीधे-साधे लोग

खेतों में चला कर हल।

बड़ी कुशलता से निकाल लेते हैं

बड़ी से बड़ी समस्या का हल।

जहां लोग करते हैं

दिन-रात मेहनत

खाते हैं मेहनत का मीठा फल।

और खुद कुआं खोद

धरती से निकाल पीते हैं निर्मल जल।

जहां प्रकृति के विधि विधान से

मंद-मंद हवा चलती है।

मधुमास की मिठास

कानों में मिश्री घुलती है।

जहां हरी चादर सी फैली है

चारों ओर खेतों में हरियाली।

अभावों से है भरा जीवन

फिर भी होठों पर सबके

छायी है खुशहाली।

जहां उपवन में गुनगुनाकर

भंवरे गाते हैं गीत।

जहां के गीतों में समाहित है

सबके मन का प्रीत।

जहां चिड़िया तिनका-तिनका

चुनकर बनाती है घोंसला।

जिसे देखकर यहां मिलता है

सबको हौसला।

जहां की सौंधी मिट्टी की खुशबू से महकता देश का हर कोना।

जहां की पावन धरती से उगता है सोना।

जहां किसानों की मेहनत से

उगता है खेतों में ज्वार बाजरा गेहूं धान।

जहां हर मौसम में प्रकृति बदलती है अपना परिधान।

हां वही है मेरा देश

वही है मेरा गांव।

जहां खड़ा है बूढ़ा बरगद

और पगडंडियां दिखा रही

पूरखों के पांव।